Toppersnotes®
Unleash the topper in you

# UP – PGT

## स्नातकोत्तर शिक्षक

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड

नागरिक शास्त्र

भाग - 2

SIERRA INNOVATIONS

# INDEX


| क्र.सं. | अध्याय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| **1.** | कौटिल्य / चाणक्य / विष्णुगुप्त | 1 |
| **2.** | अरविंद घोष [1872-1950] | 11 |
| **3.** | पण्डित जवाहर लाल नेहरू [1889-1964] | 17 |
| **4.** | राम मनोहर लोहिया (1910-1968) | 22 |
| **5.** | संघवाद | 24 |
| **6.** | विश्व की व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका | 46 |
| **7.** | भारत में संघात्मक शासन (केंद्र-राज्य संबंध) | 88 |
| **8.** | राजनीतिक दल | 108 |
| **9.** | दबाव समूह | 121 |
| **10.** | अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति - शीत युद्ध | 127 |
| **11.** | भारतीय लोकतंत्र की गतिशीलता | 142 |
| **12.** | शक्ति संतुलन (Balance of Power) | 155 |
| **13.** | ASEAN | 178 |

# 1 CHAPTER कौटिल्य / चाणक्य / विष्णुगुप्त

## कौटिल्य / चाणक्य / विष्णुगुप्त

- इनको विष्णुगुप्त व चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है।
- इनका जन्म ईसा से लगभग 400 वर्ष पूर्व तक्षशिला में माना जाता है।
- तक्षशिला विश्वविद्यालय में ये प्रोफेसर बने थे।
- एक ऐतिहासिक कहानी के अनुसार यह माना जाता है कि नन्द वंश के शासक धनानन्द ने इनका सार्वजनिक रूप से अपमान किया था और इसी अपमान के कारण इन्होंने नन्द वंश को समाप्त करके मौर्य वंश की स्थापना की जिसमें चन्द्रगुप्त मौर्य को राजा बनाया और स्वयं उनके प्रधानमंत्री बने।
- इनका प्रसिद्ध ग्रंथ **अर्थशास्त्र** प्रशासन और राजनीति पर लिखा गया एक महान ग्रंथ है।
- इसमें मुख्य रूप से **शासन कला (स्टेट क्राफ्ट)** का उल्लेख किया गया है।
- यह ग्रन्थ मूल रूप से संस्कृत भाषा में लिखा गया है और गद्य और पद्य दोनों रूपों में लिखा गया है।
- कौटिल्य के अनुसार अर्थ शब्द का अर्थ / तात्पर्य है **'मानव युक्त भूमि'** और इस भूमि पर नियंत्रण बनाए रखने और विस्तार करने की नीति अर्थशास्त्र कहलाती है।
- कौटिल्य के चिन्तन में पहली बार यथार्थवाद दिखाई देता है और उसमें एक राजा को दूसरे राजा के साथ सम्बन्ध बनाने के लिए किस प्रकार की नीतियां अपनानी चाहिए इसका भी उल्लेख किया गया है।
- 1905 में मैसूर रियासत के तंजौर पुस्तकालय में श्यामशास्त्री को हस्तलिखित पाण्डुलिपि प्राप्त हुई जिसका बाद में 1909 में उसका अंग्रेजी अनुवाद किया।
- **अर्थशास्त्र में :** 150 अध्याय, 180 प्रकरण, 15 अधिकरण व 6000 श्लोक हैं।
- कौटिल्य का ग्रन्थ अर्थशास्त्र आगमनात्मक पद्धति, विश्लेषणात्मक पद्धति, तुलनात्मक पद्धति और सौद्देश्यात्मक पद्धति पर बल देता है।
- अर्थशास्त्र को वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का मुख्य ग्रन्थ माना जाता है।
- अमेरिका के प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ और विदेश मंत्री **हेनरी किसिंजर** ने अपनी पुस्तक "वर्ल्ड आर्डर" में लिखा है कि— "यदि शासन कला की यथार्थवादी नीतियां समझनी हैं तो कौटिल्य के ग्रन्थ "अर्थशास्त्र" से अच्छी पुस्तक नहीं हो सकती।"
- पं. जवाहर लाल नेहरू ने अपनी पुस्तक **"Discovery of India"** में नेहरू ने कौटिल्य को **'भारत का मैकियावली'** कहा है।
- प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने कौटिल्य की पुस्तक अर्थशास्त्र को शासन कला पर लिखी गई सर्वश्रेष्ठ पुस्तक बताया है।
- कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में **4 विधाओं** का उल्लेख किया है—

  1. अन्वीक्षिकी → अध्यात्म, दर्शन
  2. त्रयी → ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद
  3. वार्ता → व्यापार, वाणिज्य, कृषि
  4. दण्डनीति → राजनीति

- वार्ता - व्यापार, वाणिज्य, कृषि को राज्य का प्राण बताता है।
- कौटिल्य ने राजनीति को दण्डनीति कहा है और राजा को दण्डधर कहा है।

- कौटिल्य दण्डनीति को ही सम्प्रभुता का प्रतीक माना था।
- कौटिल्य ने राज्य की उत्पत्ति के दैवीय सिद्धान्त और विकासवादी सिद्धान्त की आलोचना की और मत्स्य-न्याय को समाप्त करने के लिए राज्य की उत्पत्ति का सिद्धान्त दिया।
- **मत्स्य-न्याय** से तात्पर्य है जिस प्रकार समुद्र में बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है उसी प्रकार समाज में ताकतवर व्यक्ति कमजोर व्यक्ति को समाप्त कर देता है।
- इस व्यवस्था को समाप्त करने के लिए राजा व जनता में एक सहमति हुयी कि जनता अन्न का 1/6 हिस्सा और द्रव्य/धन का 1/10 हिस्सा राजा को देगी और बदले में राजा जनता को सुरक्षा की गारन्टी देगा।
- कौटिल्य की यह अवधारणा समझौतावादी या संविदावादी सिद्धान्त पर टिकी हुई है इसलिए कौटिल्य को राज्य की उत्पत्ति का समझौतावादी विचारक माना जाता है।
- अर्थशास्त्र में समझौतावाद एवं संविदावाद शब्द का प्रयोग कहीं पर भी नहीं किया गया है।
- कौटिल्य धार्मिक राज्य का समर्थक नहीं था बल्कि धर्मनिरपेक्ष राज्य का समर्थक था। लेकिन अर्थशास्त्र में धर्मनिरपेक्ष राज्य शब्द का प्रयोग कहीं पर भी नहीं किया है बल्कि यह कहा है कि **धर्म की बजाय अर्थ महत्वपूर्ण है**।
- कौटिल्य राज्य को कृत्रिम संस्था मानता है प्राकृतिक नहीं।
- कौटिल्य राज्य के विकासवादी सिद्धान्त का विरोधी था।
- कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में निम्नलिखित **15** अधिकरण बताएँ हैं।

  **1. अधिकरण प्रथम** - अमात्य की नियुक्ति, गुप्तचरों की नियुक्ति, राजदूतों की नियुक्ति

  **2. अधिकरण द्वितीय** - राज्य के प्रशासनिक विभागों के पदाधिकारियों, उनके कार्यों, दुर्गों के प्रकार और वित्त पर नियंत्रण

  **3. तीसरा अधिकरण** - दीवानी और फौजदारी न्यायालयों का उल्लेख और दण्ड के प्रकारों का उल्लेख।

  **4. चौथा अधिकरण** - चोरी और डकैती के उपचार की व्याख्या का विवेचन किया गया है।

  **5. पाँचवा अधिकरण** - कर्मचारियों के कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है।

  **6. छठा अधिकरण** - राज्य के सप्तांग सिद्धान्त का उल्लेख किया गया है।

  **7. सातवां अधिकरण** - पर राष्ट्र सम्बन्ध (विदेश नीति) का उल्लेख किया गया है।

  **8,9. आठवां व नौवां** - व्यसन, कमजोरियों, शक्तियों, मानव की प्रवृत्तियों आदि का उल्लेख किया गया है।

  **10. दसवां अधिकरण** - युद्ध नीति का उल्लेख किया गया है।

  **11. ग्यारहवां अधिकरण** - भेदनीति व भेदभाव की नीति अपनाने का उल्लेख किया गया है।

  **12. बारहवां अधिकरण** - दुर्बल राजा व छल कपट की नीतियों का उल्लेख किया गया है।

  **13. तेरहवां अधिकरण** - शत्रु देश के किले तक पहुंचने के उपायों का उल्लेख किया गया है।

  **14. चौदहवां अधिकरण** - विष नीतियों का उल्लेख किया गया है।

  **15. पन्द्रहवां अधिकरण** - निर्णय लेने सम्बन्धी सुझाव दिए गए हैं।
- कौटिल्य का अर्थशास्त्र न केवल प्रशासनिक व्यवस्था का उल्लेख करता है बल्कि विदेश नीति, दण्ड नीति, सुरक्षा नीति, कोष नीति, कूटनीति का भी उल्लेख करता है।
- भारतीय विद्वान **सुनील खिलनानी** के अनुसार कौटिल्य का ग्रन्थ अर्थशास्त्र किसी हिमखण्ड जैसा है जिसका एक हिस्सा राजसी शक्ति (राजनीति शक्ति) के आकाशदीप की तरह हम पर हावी रहता है और दूसरा हिस्सा गहराई में छिपा हुआ है।
- जिसमें गोपनीयता, दोहरापन, चाल बाजियां लगातार रूप निगरानी की स्थिति में बनी रहती हैं।
- **बी.पी. मेहता के अनुसार :** "कौटिल्य का ग्रन्थ अर्थशास्त्र भारतीय राजनीतिक चिन्तन का आधार है जो भारत कि शासन व्यवस्था की क्रियान्विति को व्यवहारवाद की ओर (यथार्थवाद) ले जाने का प्रयास करती है।"

## कौटिल्य के राज्य का सप्तांग सिद्धान्त :

- सप्तांग सिद्धान्त से तात्पर्य है राज्य के 7 अंग पाए जाते हैं:
  1. राजा / स्वामी
  2. अमात्य (मंत्री)
  3. जनपद (भूभाग + जनसंख्या)
  4. दुर्ग
  5. कोष
  6. सेना (दण्ड)
  7. मित्र (विदेशी / विदेश नीति)
- मित्र का सम्बन्ध विदेश नीति से है इसलिए इस अंग को अन्य अंगों से अलग माना जाता है।

**कौटिल्य ने 4 प्रकार के दुर्ग बताए थे -**

1. औदक दुर्ग
2. पार्वत दुर्ग
3. धानवन दुर्ग
4. वन दुर्ग

- वर्तमान में दुर्ग को छोड़कर सभी अंग प्रासंगिक हैं।

**1. राजा / स्वामी** :

- ✓ कौटिल्य ने राजा को राज्य का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग माना है इसीलिए इसे प्रधान अंग भी कहा जाता है।
- ✓ कौटिल्य चक्रवर्ती राजा की अवधारणा देता है अर्थात् वह राजा जिसका चारों दिशाओं में प्रभाव हो।
- ✓ **कौटिल्य राजा में 4 प्रकार की शक्तियाँ बताता है—**
  1. शारीरिक शक्ति
  2. मानसिक शक्ति
  3. बौद्धिक शक्ति
  4. आत्मिक शक्ति
- ✓ चक्रवर्ती राजा बनने के लिए राजा में तीन गुण अवश्य होने चाहिए—
  1. विवेकशील हो।
  2. शक्तिशाली सेना और उस पर अच्छा नियंत्रण।
  3. वित्तीय संसाधन अच्छे हों।
- ✓ कौटिल्य कल्याणकारी राज्य का समर्थक था इसलिए मानता था कि प्रजा के सुख में ही राजा का सुख शामिल है।

**कौटिल्य के अनुसार :**

- ✓ "राजा शिक्षित होना चाहिए अशिक्षित राजा का साम्राज्य उसी प्रकार खत्म हो जाता है जिस प्रकार घुन लगी हुई लकड़ी समाप्त हो जाती है।"
- ✓ राजा दुराचारी नहीं बल्कि आत्मसम्मत होना चाहिए जिसमें देवत्व के गुण होने चाहिए जिस प्रकार अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा किसी के साथ भेदभाव नहीं करते हैं उसी प्रकार राजा को भी भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- ✓ राजा को योग्य मंत्रियों की नियुक्ति करनी चाहिए और चापलूस मंत्रियों से दूरी रखनी चाहिए।

**कौटिल्य के अनुसार :**

- ✓ "यथा राजा तथा प्रजा।"
- ✓ कौटिल्य के अनुसार राजा निरंकुश नहीं बन सकता क्योंकि राजा पर निम्नलिखित नियंत्रण हैं—
  1. संविदा / समझौते का नियंत्रण
  2. धर्म का नियंत्रण
  3. परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों का नियंत्रण
  4. जनता का नियंत्रण
  5. शिक्षण और प्रशिक्षण का नियंत्रण
- ✓ कौटिल्य के अनुसार राजा को मंत्रियों की सहायता / सलाह से शासन संचालित करना चाहिए।
- ✓ कौटिल्य के अनुसार राजा नैतिक आचरण वाला, उच्च चरित्र वाला, कर्तव्यनिष्ठ, निष्ठावान और संयमित होना चाहिए।

**कौटिल्य के अनुसार राजाओं के प्रकार -**

1. धर्म विजयी राजा → जनकल्याण, शासन, चरित्रवान, नैतिक
2. लोभ विजयी राजा → शासन + धन संग्रह
3. राक्षस विजयी राजा → शासन + धन संग्रह + स्त्री + बच्चे + परिवार

✓ कौटिल्य धर्म विजयी राजा को सर्वश्रेष्ठ मानता है।

**कौटिल्य के अनुसार धर्म विजयी राजा में 4 प्रकार के गुण होने चाहिए—**

1. अभिगामिक गुण → नया सीखने, स्वीकार करने का गुण
2. आत्मसम्मत गुण → शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक
3. प्रज्ञा गुण → स्व ज्ञान, आत्म चेतना
4. उत्साह गुण

✓ कौटिल्य के अनुसार प्रत्येक राजा विजीगीषु होता है अर्थात् विजेता बनने की इच्छा रखता है।
✓ कौटिल्य के अनुसार राजा पुराने और अनुभवी होने चाहिए नये युवराजों को शासन का अवसर नहीं देना चाहिए क्योंकि पुराने राजा को अनुभव और परम्पराओं का ज्ञान होता है।
✓ राजा उच्च कुल का होना चाहिए।
✓ कौटिल्य के अनुसार कुलिन राजा अधिक योग्य, दयालु और दक्ष होता है।
✓ कौटिल्य के ये विचार राजतंत्र का समर्थन करते हैं इसलिए कौटिल्य को राजतंत्र का समर्थक माना जाता है।
✓ **आनुवंशिक राजतंत्र** का समर्थक माना जाता है।
✓ कौटिल्य के अनुसार राजा को अपनी दिनचर्या की शुरुआत गाय सहित बछड़े के दर्शन से प्रारम्भ करनी चाहिए।
✓ कौटिल्य राजा की दिनचर्या और रात्रीचर्या का भी उल्लेख करता है।
✓ कौटिल्य दिन में 8 घड़ी और रात में 8 घड़ी बताता है।
✓ घड़ी समय की इकाई थी और एक घड़ी में 90 मिनट होते थे।

**2. अमात्य/मंत्री** :

✓ कौटिल्य के अनुसार सप्तांग सिद्धान्त में अमात्य दूसरा अंग है।
✓ अमात्य और राजा एक गाड़ी के दो पहियों की तरह हैं जो एक दूसरे के बिना संचालित नहीं हो सकते।
✓ कौटिल्य प्रधानमंत्री के लिए **महामात्य** शब्द काम में लाता है।
✓ कौटिल्य अमात्य को मंत्री से उच्च स्तर का मानता है।
✓ कौटिल्य अपने ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' में मंत्रियों के लिए दो संस्थाओं का उल्लेख करता है—

   1. राज्य सभा / मंत्रियों की सभा
   2. मंत्रिपरिषद

✓ मंत्रिपरिषद की नियुक्ति में राजा को बहुत सावधानी रखनी चाहिए और नियुक्ति के बाद समय-समय पर उनकी परीक्षा लेते रहना चाहिए और नियुक्ति से पहले उनके चरित्र का परीक्षण करना चाहिए - जिसको कौटिल्य ने **उपधा परीक्षण** कहा है।
✓ कौटिल्य के अनुसार मंत्रियों की समय-समय पर जाँच व परीक्षण करते रहना चाहिए।

**कौटिल्य ने 4 प्रकार के परीक्षण बताए हैं—**

1. धर्मोपधा परीक्षण → मंत्री अधर्मी तो नहीं है इसकी जाँच
2. अर्थोपधा परीक्षण → मंत्री लालची तो नहीं है।
3. कामोपधा परीक्षण → मंत्री काम वासना में तो नहीं डूबा हुआ है।

**3. जनपद (भूमि + जनता) :**

- ✓ भूमि और जनसंख्या को कौटिल्य जनपद में शामिल करता है उनके अनुसार जनसंख्या और भू-भाग पर नियंत्रण करने के लिए **4** भागों में विभाजन होना चाहिए—

  1. 10 गाँवों पर → संग्रहण / संग्राहक
  2. 200 गाँवों पर → खार्वटिक
  3. 400 गाँवों पर → द्रोणमुख
  4. 800 गाँवों पर → स्थानीय

**4. दुर्ग** :

- ✓ कौटिल्य अपने अर्थशास्त्र में **4** प्रकार दुर्ग के बताता है—

  1. औदक दुर्ग - जल दुर्ग
  2. पार्वत दुर्ग - पहाड़
  3. धान्वन दुर्ग - मरुस्थल
  4. वन दुर्ग - वन दुर्ग

- ✓ **विधान दुर्ग** → विधान दुर्ग मुख्य दुर्ग के लिए शब्द प्रयोग किया है।
- ✓ **निवेश दुर्ग** → मुख्य दुर्ग के अन्दर के भवनों व महत्त्वपूर्ण अंगों के लिए शब्द काम में लेता है।

**5. कोष** :

- ✓ कौटिल्य के अनुसार किसी शक्तिशाली राज्य के लिए कोष शक्तिशाली होना चाहिए अर्थात् कर संग्रहण और उसका प्रबन्धन अच्छा होना चाहिए।
- ✓ कर संग्रहण / कोष संग्रहण करने वाले अधिकारी को - **समाहर्ता** कहा जाएगा और कोषाध्यक्ष को **सन्निधाता** कहा जाएगा।
- ✓ यदि शक्तिशाली कोष नहीं होगा तो शक्तिशाली सेना भी नहीं होगी और बिना शक्तिशाली सेना के दूसरे राज्य का नियंत्रण हो जाएगा।
- ✓ कौटिल्य ने अपनी दण्ड व्यवस्था में आर्थिक दण्ड का प्रावधान भी किया है जिसको **पणादण्ड** भी कहा गया (पण - मुद्रा)।

**6. सेना** :

- ✓ कौटिल्य ने सेना में दण्ड और कानून व्यवस्था दोनों को शामिल किया है।
- ✓ कौटिल्य के अनुसार सेना के बारे में राजा को व्यावहारिक नीति अपनानी चाहिए।
- ✓ सेनापति निडर, विश्वसनीय व छल-कपट से दूर होना चाहिए।
- ✓ सेना का मुख्य कार्य है सीमाओं की रक्षा करना उनमें विस्तार करना और जितनी सीमाओं पर नियंत्रण है उसको बनाए रखना।

**7. मित्र (विदेश नीति)** :

- ✓ कौटिल्य के राज्य के सप्तांग सिद्धान्त में यह अंग अन्य 6 अंगों से भिन्न है क्योंकि इसका सम्बन्ध विदेश नीति से है।
- ✓ कौटिल्य ने विदेश नीति के **परराष्ट्र सम्बन्ध** शब्द का प्रयोग किया है।

## कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त :

- ➢ मण्डल सिद्धान्त में **12 राज्यों** के वृत के मध्य आपसी सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है।
- ➢ यह मण्डल वर्तमान में **शक्ति सन्तुलन** के सिद्धान्त से जुड़ा हुआ है।
- ➢ 12 राज्यों के मध्य में **72 प्रकार** प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं।
- ➢ कौटिल्य का 12 राज्यों का मण्डल निम्न प्रकार से है-
  - ✓ लघु मण्डल में **4 राज्य** व **18 प्रकार** की प्रवृत्तियाँ होंगी।
  - ✓ विजिगीषु → अरि → मित्र → मध्यम
  - ✓ 12 राज्यों के वृत में **विजिगीषु मध्यम** में स्थित है।

- ✓ **विजीगीषु** शब्द का अर्थ है - विजेता बनने की इच्छा रखने वाला।
- ✓ मण्डल सिद्धान्त में **वन नियम / सिंह नियम / शक्ति नियम** लागू।

➢ वन नियम से तात्पर्य है - शक्ति के आधार पर विजीगीषु का निर्धारण होगा।

**कौटिल्य के अनुसार राजा के पास 3 प्रकार की शक्ति होती है—**

1. **उत्साह की शक्ति** (नैतिक शक्ति)
2. **प्रभाव की शक्ति** (शस्त्रों की शक्ति)
3. **मंत्र की शक्ति** (कूटनीति)

**लघु मण्डल :**

➢ कौटिल्य ने लघु मण्डल की अवधारणा भी दी है जिसमें **4 राज्यों** को शामिल किया है।
- ✓ स्वयं (विजीगीषु)→ शत्रु / अरि→मित्र→ मध्यम

➢ लघुमण्डल में **4 राज्य** और उनकी **18 प्रवृत्तियाँ** होंगी।

**Note:**

➢ मण्डल सिद्धान्त **7 वें अधिकरण** के दूसरे अध्याय में है।

➢ मण्डल सिद्धान्त में सबसे शक्तिशाली राज्य **उदासीन राज्य** को माना है।

➢ **मध्यम राज्य** को भी शक्तिशाली माना है क्योंकि वह विजीगीषु और शत्रु दोनों राज्यों की सहायता करता है और सहायता लेता है।

## कौटिल्य की षडगुण नीति :

➢ राज्यों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करते समय एक राजा को निम्न **6 प्रकार** की नीतियाँ अपनानी चाहिए—
1. **संधि**→ (बातचीत / समझौता / संवाद करना)
2. **विग्रह** → (युद्ध का वातावरण / सम्बन्ध विच्छेद)
3. **आसन** → (तटस्थता / समान दूरी / चुप रहना)
4. **यान** → (युद्ध करना / आक्रमण करना)
5. **संश्रय** → (शरण में चले जाना)
6. **द्वैधीभाव** → (दोहरी नीति अपनाना / संधि व विग्रह एक साथ करना)

➢ यह सिद्धान्त भी **शक्ति सन्तुलन** के सिद्धान्त से जुड़ा हुआ है।

➢ यह सिद्धान्त **यथार्थवादी नीति** से सम्बन्धित है।

➢ यह **मण्डल सिद्धान्त** का ही अंग है।

**उपाय :**

1. **साम** →बातचीत / संधि / संवाद
2. **दाम** → लालच देना / आर्थिक प्रलोभन
3. **भेद** → फूट डालना / कमजोर करना
4. **दण्ड** → युद्ध करना

**श्रुत अवस्था – प्रकार**

| | | |
|---|---|---|
| निष्ठार्थ (स्वस्वैच्छोक क्षमता है) | परिमितार्थ | शासनानुसार |
| राजा का 100% विश्वास | 1/4% विश्वास | केवल संदेशवाहक |

**राजदूतों के कार्य :**

1. **प्रेषण** – संदेश भेजना।
2. **संधिपालत्व** – संधियों का पालन करना।
3. **मित्र संग्रह** – मित्र बनाना।
4. **प्रताप** – शत्रु देश को चुनौती देना।
5. **सहृदयभेद** – शत्रु देशों के बीच मित्रता को समाप्त करवाना।
6. **उपजाप** – शत्रु देश के विरुद्ध षड्यंत्र करवाना।
7. **समाधिमोक्ष** – किसी विदेशी के साथ संबंधों को समाप्त करके नये सम्बन्धों की तलाश करना।
8. **पराक्रम** – परिस्थिति अनुसार वीरता का परिचय देना।

## कौटिल्य के अनुसार गुप्तचर व्यवस्था :

➢ कौटिल्य ने अपने ग्रंथ **अर्थशास्त्र** में शक्तिशाली राज्य के लिए गुप्तचर व्यवस्था का उल्लेख किया है और कहा है— "राजा को अपनी दिनचर्या की पहली एक घड़ी गुप्तचरों के साथ चर्चा और सूचनाओं में बितानी चाहिए।"

1. **स्थाई गुप्तचर (संस्था):—**
   (i) **कापाटिक** → शत्रु की जानकारी प्राप्त करने वाला एक छद्म छात्र। यह गुप्तचर छात्र के रूप में कार्य करता है।
   (ii) **उदास्थित** → इस प्रकार के गुप्तचर संन्यासी के वेश में रहकर— कृषि, व्यापार, पशुपालन जैसे स्थानों पर रहकर संन्यासी के रूप में कार्य करेगा।
   (iii) **गृहपतिक**→ इस प्रकार का गुप्तचर बुद्धिमान, पवित्र हृदय व किसान के रूप में रहते हुए गुप्तचर सूचनाएं प्राप्त करेगा।
   (iv) **तापस** →तपस्वी की तरह साधु संत की वेशभूषा में (पराजिविका) राजा के लिए सूचना प्राप्त करना।
   (v) **वैदेहक** →व्यापारी के रूप में रहकर गुप्तचर का कार्य करना।
2. **भ्रमणशील गुप्तचर (संचारा):—**
   (i) **वनाचर** – जो वनों में रहकर, घूमकर राजा को सूचनाएं प्राप्त करता हो।
   (ii) **तीक्ष्ण** – ऐसा गुप्तचर जो धन के लिए अपने प्राणों को भी त्याग सकता हो।
   (iii) **स्त्री** – कौटिल्य के अनुसार ऐसे गुप्तचर जिनका सम्बन्ध राजा से नहीं है लेकिन ऐसे लोगों का पालन-पोषण करना राजा की जिम्मेदारी होती है क्योंकि ऐसे लोगों को धर्मशास्त्र, ज्योतिष और समुद्र विज्ञान व तंत्र विद्या का ज्ञान होता है। इस प्रकार के गुप्तचर अपने विशेष ज्ञान का प्रयोग करके राजा के कार्यों में सहायता करते हैं।
   (iv) **रसद** – ऐसा गुप्तचर जो बहुत निर्दयी हो, अपने भाई को भी जहर देने की क्षमता रखता हो, किसी से भी प्रेम नहीं करता हो, इसको **विष पुरुष** भी कहते हैं।

## कौटिल्य के अनुसार न्याय व्यवस्था

➢ कौटिल्य ने दण्ड व्यवस्था और न्याय व्यवस्था का उल्लेख किया है। उनके अनुसार न्याय अरस्तू की तरह **वितरणात्मक व सुधारात्मक** होनी चाहिए।

✓ दण्ड व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य सुधार करना होना चाहिए।

✓ दण्ड सभी के लिए समान नहीं होना चाहिए, बल्कि **वर्ण** के आधार पर, **लिंग** के आधार पर व **आयु** के आधार पर भेदभाव करना चाहिए।

➢ **कौटिल्य दो प्रकार के न्यायालय बताता है—**

1. **धर्मस्थनीय** 2. **कंटकशोधन**

1. **धर्मस्थनीय न्यायालय :**
   - ✓ ये **दीवानी व सिविल मामलों** से जुड़े हुए हैं, जिनमें भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी से सम्बन्धित मामले आते हैं।
   - ✓ इस प्रकार के न्यायालयों में न्यायाधीश को **'व्यावहारिक'** कहा जाता है।

2. **कंटकशोधन न्यायालय :**
   - ✓ ये **फौजदारी व आपराधिक न्यायालय** होंगे। इसमें चोरी, डकैती व हत्या जैसे आपराधिक मामले आते हैं।
   - ✓ इन न्यायालयों के न्यायाधीश को **'प्रदेष्टा'** कहा जाता था।
   - ✓ न्यायपालिका को कार्यपालिका से स्वतंत्र रखना चाहिए लेकिन अत्यधिक स्वतंत्र भी नहीं रखना चाहिए।
   - ✓ कौटिल्य जनपद को **4 भागों** में विभक्त करता है। इसी प्रकार स्थानीय न्यायालय को भी कौटिल्य **4 भागों** में विभाजित करता है—
     1. **10 गाँवों पर** → संग्रहण न्यायालय
     2. **200 गाँवों पर**→ खार्वटिक न्यायालय
     3. **400 गाँवों पर** → द्रोणमुख न्यायालय
     4. **800 गाँवों पर** → स्थानीय न्यायालय

**कौटिल्य के अनुसार दण्ड के प्रकार - 4**

1. वाक् दण्ड
2. धिक् दण्ड
3. अर्थ दण्ड
4. भौतिक दण्ड

**विवरण:**

1. **वाक् दण्ड** - समझाना, बुझाना, फुसलाना।
2. **धिक् दण्ड** - डाँटना, फटकारना, सार्वजनिक रूप से बेइज्जत करना।
3. **अर्थ दण्ड** - मुद्रा का दण्ड लगाना (जुर्माना)।
4. **भौतिक दण्ड** - शारीरिक दण्ड देना (कोड़े मारना)।

- ➢ कौटिल्य के अनुसार दण्ड वर्ण के अनुसार देना चाहिए।
- ➢ कौटिल्य वर्ण व्यवस्था का समर्थक था लेकिन वर्ण व्यवस्था का समर्थन जन्म के आधार पर नहीं बल्कि **धर्म / कार्य** के आधार पर करता है।
- ➢ कौटिल्य ने ब्राह्मण को सबसे कम और शूद्र को सबसे अधिक दण्ड देने का प्रावधान सुझाव दिया है।
- ➢ क्षत्रिय को ब्राह्मण से ज्यादा, वैश्य को क्षत्रिय से ज्यादा व शूद्र को सबसे ज्यादा दण्ड मिलना चाहिए।
- ➢ दण्ड देते समय **उम्र और लिंग** को भी ध्यान में रखना चाहिए। महिलाओं को कम दण्ड देना चाहिए और वृद्ध व्यक्तियों को भी कम दण्ड देना चाहिए।
- ➢ कौटिल्य अर्थशास्त्र में दण्ड पर सबसे अधिक बल देता है इसलिए राजनीति को **दण्डनीति** कहता है।

## कौटिल्य के अनुसार प्रशासनिक व्यवस्था

- ➢ कौटिल्य के ग्रन्थ अर्थशास्त्र में सबसे अधिक बल प्रशासनिक व्यवस्था पर दिया गया है।
- ➢ विभाग को **तीर्थ** कहता है, विभागाध्यक्ष को **तीर्थाध्यक्ष** कहता है।
- ➢ कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में **18 विभागों** का उल्लेख किया है—
  1. **समाहर्ता** – यह राज्य का मुखिया था जो कर संग्रहण का कार्य करता था। इसको वर्तमान में **राज्यपाल** के समान माना गया।
  2. **सन्निधाता** – राजस्व पर नियंत्रण रखने वाला अधिकारी या कोषाध्यक्ष। इसको वर्तमान **जिला कलेक्टर** की तरह माना गया।

3. **दौवारिक** – राजमहल की आन्तरिक व्यवस्था देखने वाला अधि.।
4. **अन्तर्वेशिक** – राजा का मुख्य अंगरक्षक।
5. **व्यावहारिक** – कारखानों की देख-रेख करने वाला।
6. **आयुधगाराध्यक्ष** – गोला बारूद व हथियारों का संरक्षक।
7. **कुप्याध्यक्ष** – वनों का संरक्षक।
8. **पौतवाध्यक्ष** – व्यापारिक गतिविधियों का अध्यक्ष।
9. **शुल्काध्यक्ष** – सीमा शुल्क लगाने वाला अधिकारी।
10. **सूनाध्यक्ष** – पशु-पक्षियों की देख-रेख व वध को रोकने वाला अधिकारी।
11. **नवाध्यक्ष** – जल परिवहन / नौका परिवहन को देखने वाला।
12. **गणिकाध्यक्ष** – वेश्याओं पर नियंत्रण रखने वाला।
13. **आकराध्यक्ष** – खनिज पर नियंत्रण रखने वाला।
14. **दुर्गपाल** – किले का रक्षक।
15. **व्यावहारिक** – धर्मस्थनीय न्यायालयों का न्यायाधीश।
16. **प्रदेष्टा** – कंटकशोधन न्यायालयों का न्यायाधीश।
17. **पण्याध्यक्ष** – मुद्रा / व्यापार / आयात-निर्यात का अध्यक्ष।
18. **सुराध्यक्ष** – शराब विभाग का अध्यक्ष।

✓ कौटिल्य गाँव के मुखिया को **'गोप'** कहता है।

✓ प्रत्येक गाँव में गोप नहीं होता था, चार-पाँच गाँवों को मिलाकर एक गोप होता था। इनको **स्थानीय अधिकारी** भी कहते थे।

**अन्य प्रशासनिक शब्द:**

- **रक्षिन** – कौटिल्य 'रक्षिन' शब्द अपराध को रोकने के लिए **पुलिस** के लिए करता है।
- **नायक** – सेना का संचालन करने वाला।
- **पौर** – नगर का प्रशासन चलाने वाला अधिकारी।
- **पंचग्रामिक** – सीमा विवादों का हल करने वाला अधिकारी।
- **स्थानिक** – कई गोपों का उच्च अधिकारी होता था जिसका संबंध भी स्थानीय स्वशासन से था।

**कौटिल्य के अनुसार युद्ध के तीन प्रकार—**

**1.** धर्म युद्ध **2.** कूट युद्ध **3.** तुष्णि युद्ध

**विवरण:**

**1. धर्म युद्ध** – नियमों के अनुसार युद्ध करना।

**2. कूट युद्ध** – धोखेबाजी, सोये हुए सैनिकों पर आक्रमण करना। इसे **अधार्मिक युद्ध** भी कहते हैं।

**3. तुष्णि युद्ध** – जिस युद्ध में घटिया से घटिया तरीका भी अपनाया जाये, जैसे— सैनिकों के खाने में जहर मिला देना।

## मैकियावली व कौटिल्य में तुलना (समानता)

- दोनों यथार्थवादी विद्वान हैं।
- दोनों धर्मनिरपेक्षता के समर्थक हैं।
- दोनों शक्ति की राजनीति के समर्थक हैं।
- दोनों युद्ध को अनिवार्य मानते हैं।

- दोनों शासन कला पर विचार देते हैं।
- दोनों ही राजतंत्र के समर्थक व दोनों गणतंत्र शासन का उल्लेख करते हैं।

## मैकियावली व कौटिल्य में अन्तर :

- मैकियावली केवल शासन कला पर का उल्लेख करता है जबकि कौटिल्य शासन कला के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का भी उल्लेख करता है।
- कौटिल्य महिला उत्तराधिकारी का समर्थक था जबकि मैकियावली समर्थक नहीं था।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

**2**

**CHAPTER**

# अरविंद घोष [1872-1950]

## अरविन्द घोष :-

- अरविन्द घोष प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, चिन्तक और राष्ट्रवादी विद्वान थे। वे राष्ट्रवादी, आध्यात्मवादी, उग्रवादी / उग्रराष्ट्रवाद, महामानववादी दार्शनिक थे।
- ये 10 वर्ष की आयु में लंदन पढ़ने के लिए चले गये थे और उच्च शिक्षा इन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में की। इस विश्वविद्यालय में 'मजलिस' छात्र संगठन के सदस्य बनाये। छात्र संगठन उग्रविचारों का था।
- लोटस एवं ड्रेगर (कमल एवं कटार) नामक छात्र संगठन के सक्रिय सदस्य थे। ये एक गुप्त क्रान्तिकारी संगठन था और इसके सदस्य रहते हुए इन्होंने क्रान्तिकारियों के लिए हथियार भेजने का कार्य किया।
- अरविन्द घोष उच्च शिक्षा के बाद गायकवाड़ (बड़ौदा रियासत) के सम्पर्क में रहे। बड़ौदा में प्रोफेसर बने। बड़ौदा के बाद में नेशनल कॉलेज कोलकाता में प्रोफेसर रहे।

## अरविन्द घोष के जीवन के पहलू :—

- अरविन्द घोष ने कलकत्ता जाने के बाद प्रो. पद को छोड़ कर राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े। 1905 के बंगाल विभाजन के विरुद्ध राजनीतिक आन्दोलन में प्रवेश किया।
- बंगाल विभाजन का विरोध करने के लिए उन्होंने 'वन्दे मातरम्' नामक समाचार-पत्र में अनेक लेख लिखे। जिसके सम्पादक विपिनचन्द्र पाल थे। विपिनचन्द्र पाल के त्याग पत्र देने के कारण अरविन्द घोष भी इस समाचार-पत्र के सम्पादक बने।
- महादेव गोविन्द रानाडे का समाचार-पत्र **'इन्दु प्रकाश'** पूना से प्रकाशित होता था जिसमें अरविन्द घोष ने अनेक लेख प्रकाशित किये। जिनको 'पुराने दीपक के बदले, नये दीपक' (**New lamps for old lamps**) नामक लेख प्रकाशित किये। और ये लेख सामाजिक और राजनीतिक चेतना पैदा करते हैं।
- ये उदार राष्ट्रवादियों को पुराने दीपक कह रहे थे तथा उग्र राष्ट्रवादियों को नये दीपक कह रहे थे।
- इन्होंने उदार राष्ट्रवाद की आलोचना की है। "हम अंधों का मार्गदर्शन यदि अंधा नहीं तो एक आँख वाले द्वारा किया जा रहा है।"
  - ✓ 1906 में **'युगान्तर'** नामक समाचार पत्र कलकत्ता से प्रारम्भ किया। जिसमें उदार राष्ट्रवादियों की आलोचना की। इस कारण 1907 के सूरत विभाजन का **'बौद्धिक जनक'** अरविन्द घोष को माना जाता है।
- 1908 में मुजफ्फरपुर बमकाण्ड में इन पर आरोप लगे। 1909 के अलीपुर बमकाण्ड में भी इन पर आरोप लगे। इस कारण इनको बन्दी बना लिया और 1 वर्ष तक कठोर यातनाएँ दी गई। परिणामस्वरूप अन्त में ये 1910 में **'पांडिचेरी'** चले गये जहाँ पर इन्होंने **'ऑरोविल'** नामक आश्रम की स्थापना की। जहाँ पर ये जीवन पर्यन्त रहे। इन्होंने अपने इस आश्रम के लिए कहा था कि— "ये स्थान मेरे एकांत का, मेरी तपस्या का स्थान है और ये तपस्या मेरे स्वयं के आविष्कार के लिए होगी।"
- अरविन्द घोष ने पश्चिमी सभ्यता की आलोचना की है। उनके अनुसार पश्चिम केवल बाहरी तत्व पर बल देता है जबकि आध्यात्मिकता और नैतिकता ही कल्याण का सर्वोच्च मार्ग है।
- ऑरोविल आश्रम से दो समाचार पत्र प्रकाशित करते थे— **'धर्म'** (बंगाली भाषा में), **'कर्मयोगी'** (अंग्रेजी भाषा में)।
  - ✓ ये दो साप्ताहिक समाचार पत्र थे। और इन दोनों का मुख्य उद्देश्य **'आध्यात्मिक राष्ट्रवाद'** का प्रचार-प्रसार करना था।
  - ✓ अरविन्द घोष 'पूंजीवाद' का विरोध करते हैं लेकिन वे मानते हैं कि समाजवादी राज्य न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला साधन है।

- लोकतंत्र और समाजवाद मानवता का विकास करते हैं और आध्यात्मिक व्यक्ति ही **'मानवतावादी'** हो सकता है और 'मानवतावाद' ही सारी विश्व की समस्याओं का हल कर सकता है।
- रविन्द्र नाथ टैगोर ने अरविन्द घोष के बारे में कहा है कि— "अरविन्द घोष भारतीय संस्कृति और सभ्यता के **मसीहा** थे जिन्होंने भारत को विश्व में पहचान दिलायी।"
- अरविन्द घोष ने अपने विचारों में इस बात पर बल दिया कि **24 नवम्बर 1926** को मुझे एक लम्बी साधना का एक प्रतिफल प्राप्त हुआ और एक परम शक्ति के दर्शन हुए।
- अरविन्द घोष के जीवन पर स्वामी विवेकानन्द, जर्मनी के दार्शनिक हीगल, जर्मनी नीत्शे (अतिमानव का सिद्धान्त) का प्रभाव पड़ा।
- आयरलैंड के नेता 'पारनेल' से प्रभावित थे।
- लॉर्ड लाम्ब्रेख जर्मन से प्रभावित थे।
- इन्होंने **'संस्कृतियों का चक्र'** सिद्धान्त दिया था। इसी से प्रभावित होकर अरविन्द घोष ने **'मानव चक्र'** का सिद्धान्त दिया था।
- **'आध्यात्मिक नियतिवाद'** की अवधारणा अरविन्द घोष ने दी।
- आर्थिकवाद अवधारणा — कार्ल मार्क्स
- सुखवादी अवधारणा — बेन्थम
- मानवतावादी अवधारणा — महात्मा गाँधी
- आध्यात्मिक अवधारणा — अरविन्द घोष।

## अरविन्द घोष का निष्क्रिय प्रतिरोध —

- अरविन्द घोष उग्र राष्ट्रवादी थे उन्होंने ये सिद्धान्त **"आयरलैंड के स्वतन्त्रता सेनानियों"** से लिया था।
- आयरलैंड के स्वतन्त्रता सेनानी 'पारनेल' के **'सिन फिन'** आन्दोलन से प्रभावित होकर 'निष्क्रिय प्रतिरोध' की अवधारणा ली।
- निष्क्रिय प्रतिरोध में अरविन्द घोष ने गोपाल कृष्ण गोखले की आलोचना करते हुए कहा था कि— "उनकी शान्तिपूर्ण आन्दोलन की माँग एक बहुत खतरनाक सीख है जो भारतीय समाज पर अत्यधिक भारी पड़ेगी।"
- हिंसात्मक साधनों से स्वराज प्राप्त करना, निष्क्रिय प्रतिरोध का लक्षण है।
- अरविन्द घोष ने निष्क्रिय प्रतिरोध के **दो अर्थ** बताये हैं —
  1. यदि हमारे ऊपर उत्पीड़न किये जायेंगे तो हम प्रतिकार में हम कानूनी साधन प्रयोग में लेंगे।
  2. हम सरकार के कुछ मामलों में सहयोग नहीं करेंगे। जब तक हमें अधिकार प्राप्त नहीं हो जाते।

### अन्तर :-

| क्र. | सत्याग्रह | निष्क्रिय प्रतिरोध |
|---|---|---|
| 1. | हिंसा का कोई स्थान नहीं (अहिंसा)। | रक्षात्मक व अन्य कारणों से हिंसा को पर्याप्त स्थान। |
| 2. | ये निष्काम कर्म पर आधारित है। | ये फल प्राप्ति पर बल देता है। |
| 3. | साध्य और साधन की एकता पर बल देता है। | साध्य के लिए साधन बदलने पर बल देता है। |
| 4. | ये हृदय परिवर्तन पर बल देता है, दूसरे को पीड़ा नहीं देना चाहता है। | ये दूसरे को पीड़ा देने का विकल्प भी रखता है। |
| 5. | ये भावनात्मक तत्वों पर बल देता है। जैसे — प्रेम, अहिंसा आदि। | ये भावनात्मक तत्वों की बजाय उद्देश्यों पर बल देता है। |

- एकात्म मानववाद → दीन दयाल उपाध्याय
- नव मानववाद → M.N. Roy
- महामानववाद → अरविन्द घोष

## अरविन्द घोष के राष्ट्रवाद से सम्बन्धित विचार :-

- अरविन्द घोष का राष्ट्रवाद **धार्मिक और आध्यात्मिक राष्ट्रवाद** है।
- अरविन्द घोष ने राष्ट्र की पहचान धर्म के आधार पर की।
- **अरविन्द घोष** — "केवल भौगोलिक भू-खण्ड केवल राष्ट्र नहीं हो सकता बल्कि राष्ट्र एक बौद्धिक संकल्पना है। भारत माँ स्वयं साक्षात् भगवती है जो सदियों से अपनी सन्तानों का पालन-पोषण करती आई है आज विदेशी शासकों ने इसके स्वाभिमान को चूर-चूर किया है। हमें भारत माँ की बेड़ियों को काटना है और इसको विदेशी शासन से मुक्त करना प्रत्येक भारतीय नागरिक का परम कर्तव्य है।"
- **अरविन्द घोष** — "राष्ट्रवाद सनातन धर्म है और सनातन धर्म से तात्पर्य है— राष्ट्र के प्रति त्याग, बलिदान और आपस में प्रेम और सहयोग की भावना।"
- **अरविन्द घोष** — "ब्रिटिश संस्कृति उपयोगवादी है वहीं भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकवादी है।"
- **अरविन्द घोष** — "राष्ट्रवाद एक धर्म है, ईश्वर है, भारत ईश्वर के यहाँ से आता है और ईश्वर ही इसका मार्गदर्शन कर रहा है।"
- **अरविन्द घोष** — "राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है बल्कि राष्ट्रवाद एक धर्म है जो सीधा ईश्वर से आता है तथा वह 'अनश्वर' है।"
  - ✓ इनका राष्ट्रवाद राष्ट्रवाद से अन्तर्राष्ट्रीयवाद की ओर बढ़ रहा था क्योंकि उनका राष्ट्रवाद हिटलर और मुसोलिनी की तरह संकीर्ण नहीं था वह **'विश्वराज्य'** की स्थापना करना चाहते थे।
- अरविन्द घोष के राष्ट्रवाद में संकीर्ण लौकिकता नहीं है उसमें आस्था, प्रेम, धर्म, नैतिकता आदि का समावेश है।

## अरविन्द घोष का महामानव का सिद्धान्त :—

- जर्मन विद्वान **लाम्प्रेख्ट** से प्रभावित होकर अरविन्द घोष ने महामानव का सिद्धान्त दिया जिसको **'मानव चक्र'** सिद्धान्त भी कहा गया। अरविन्द घोष ने इस चक्र सिद्धान्त में 5 प्रकार के चक्र बताये —
  1. **प्रतीकात्मक** — वैदिक युग
  2. **प्रकारात्मक** — उत्तर वैदिक — शौर्यकाल
  3. **परम्परागत** — मध्यकालीन — मुगल
  4. **व्यक्तिवादी** — आधुनिक — अंग्रेज
  5. **आत्मनिष्ठ** — आत्मा पर अधिकार
- आत्मनिष्ठ व्यवस्था में आध्यात्मिक अवस्था होगी और इसमें व्यक्ति की आत्मा की सर्वोच्च अवस्था होगी और ये अवस्था ही 'महामानव' या 'अतिमानव' की अवस्था कहलायेगी। इस अतिमानव की अवस्था में सारा कार्य 'आध्यात्मिक नियतिवाद' पर टिका हुआ होगा।
- अरविन्द घोष का आध्यात्मिक नियतिवाद इस बात पर बल देता है कि इतिहास की प्रत्येक घटना या इतिहास के प्रत्येक चरण के मूल में ईश्वर की शक्तियाँ कार्य करती हैं।
- **अरविन्द घोष** — "परमात्मा की निर्णायक शक्ति की गतिशील क्रियाकलाप ही इतिहास है।
- **अरविन्द घोष** — "ब्रिटिश दमन ईश्वर के हथौड़े के अलावा और कुछ नहीं है जो हमें उचित आकार में लाने के लिए पीट रहा है ताकि हम शक्तिशाली राष्ट्र बन सकें और संसार में अपने कार्यों को अपने अनुरूप कर सकें।"
- **अरविन्द घोष** — "ब्रिटिश सरकार के ऊपर आक्रमण ईश्वरीय देन है।"
  - ✓ ये भगवत् गीता से भी प्रभावित थे जिसमें ये उल्लेख है कि वास्तविक कर्ता मानव नहीं बल्कि ईश्वर है, व्यक्ति तो केवल **'निमित्तमात्र'** है।

- ✓ अरविन्द घोष ने स्वतंत्रता को भी आध्यात्मिक आधार पर ही परिभाषित किया। उनके अनुसार स्वतंत्रताएँ **3 प्रकार** की होती हैं:
  1. राष्ट्रीय स्वतंत्रता
  2. मानवीय / व्यक्तिगत स्वतंत्रता
  3. आन्तरिक स्वतंत्रता → **आन्तरिक स्वतंत्रता से तात्पर्य — आत्मा की स्वतंत्रता से है।**
- ➢ जिस प्रकार व्यक्ति के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है उसी प्रकार राष्ट्र के लिए **'स्वशासन'** आवश्यक है।
- ➢ **अरविन्द घोष** — "स्वतंत्रता एक सद्गुण है। ईश्वर के कानूनों का पालन करने, धर्म का पालन करने और अपने कर्तव्यों का पालन करने में ही स्वतंत्रता निहित है। आत्मा आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त होने पर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता स्वतः ही प्राप्त हो जाएगी।
- ➢ **अरविन्द घोष** — "अपने जीवन के नियमों का पालन करना ही स्वतंत्रता है।"
- ➢ **अरविन्द घोष** — "ईश्वरीय नियम (राष्ट्र के नियम) एवं जीवन नियम एक समान ही होते हैं।"
- ➢ स्वतंत्रता व्यक्ति के जीवन और विकास के लिए आवश्यक है उतनी ही राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक है।
- ➢ "अपने द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना ही स्वतंत्रता है।" — **रूसो**
- ➢ "मेरा जीवन ही मेरा सिद्धान्त / नियम है।" — **गाँधी**
- ➢ अरविन्द घोष एक राजनीतिक दार्शनिक थे लेकिन आध्यात्मिक राष्ट्रवाद के साथ-साथ वे शिवाजी जैसे महान पुरुषों को भी राष्ट्रवाद का आधार मानते थे। गुरु गोविन्द सिंह को भी राष्ट्रवाद का आधार मानते थे।
- ➢ अरविन्द घोष **योग** को भी राष्ट्रवाद में शामिल करते हैं और **4 प्रकार के योग** बताते हैं —
  1. ज्ञान योग
  2. भक्ति योग
  3. कर्म योग
  4. राज योग
- ➢ अरविन्द घोष का राष्ट्रवाद उपहार के रूप में प्रिय रहा है जिनको अरविन्द घोष का **'पागलपन'** कहा गया है —
  1. व्यक्ति अपनी शिक्षा-दीक्षा और धन या दौलत ईश्वरीय मानता है।
  2. ईश्वर का नाम ही नहीं लेंगे बल्कि उसको अपने समक्ष समझ महसूस भी करेंगे।
  3. भारत एक देश ही नहीं बल्कि **'जननी'** है।

Toppers notes
Unleash the topper in you

## अरविन्द घोष के महत्वपूर्ण कथन

- ➢ **अरविन्द घोष** — "मनुष्य एक अस्थाई प्रकार का जीवन है ये प्राणियों के जीवन में अन्तिम अवस्था नहीं है बल्कि मानव के बाद अगला पड़ाव 'महामानव' का होगा। जो अन्तरात्मा की उपज है और विकास का तर्कफल है।"
- ➢ **अरविन्द घोष** — "कांग्रेस मध्यमवर्गीय संस्था जो बुलबुलों से खेलती है और अंग्रेजी शासन का गुणगान करती है।"
  - ✓ घोष ने कांग्रेस को **'भारतीय अराष्ट्रीय कांग्रेस'** कहा था।
- ➢ "जीवन तो जीवन होता है चाहे वह कुत्ते-बिल्ली हो या मानव का, जीवन में अन्तर व्यक्ति करता है।"
- ➢ "हमारा निर्देशन वे लोग कर रहे हैं जो भले ही अन्धे ना हों लेकिन आँखों पर पट्टी जरूर लगा रखा है।"
- ➢ "युगों पुराना भारत अभी मरा नहीं है उसने अभी मुँह खोला है, वो जीवित है और उसे अपनी मानव जाति की सेवा करनी है।"
- ➢ **अरविन्द घोष** — "व्यक्ति में ईश्वरीय तत्व होता है जरूरत है उसे जानने की, विकसित करने की, व उसे महसूस करने की।"
- ➢ **A.G. (अरविन्द घोष)** — "आत्मा के कारण पूरे ब्रह्माण्ड को भी जीत सकता है और आत्मा के कारण ही 'विश्वराज्य' की स्थापना करना चाहता है।"
- ➢ "मातृभूमि के प्रेम से बड़ा कोई प्रेम नहीं होता है। स्वशासन न केवल व्यक्ति की ताकत का द्योतक है बल्कि राष्ट्र की ताकत का भी द्योतक है।"
- ➢ "हमारा शत्रु हमारी कायरता है, अंधिभावकता शत्रुओं को बढ़ावा देती है।"

- "राष्ट्रवाद एक जीवन शैली है। राष्ट्रवाद एक आस्था व एक धर्म है और यदि राष्ट्रवाद के सामने कोई समस्या खड़ी करता है तो उसकी हत्या ईश्वर की इच्छा है।"
- "भारत कभी नष्ट नहीं हो सकता, हमारी नस्ल कभी लुप्त नहीं हो सकती, राष्ट्र किसी राजनीतिक तत्व का नाम नहीं बल्कि देवत्व, भगवती, भारत माँ व भारती का स्वरूप है।"
- **अरविन्द घोष** राज्य और राष्ट्र में अन्तर करते हैं। राष्ट्र को ईश्वर का स्वरूप मानते हैं जबकि राज्य को केवल एक राजनीतिक यंत्र मानते हैं।
- अरविन्द घोष **सावयव-वाद (Organicism)** का विरोध करते हैं (व्यक्ति की तुलना राज्य से करना)।
- "भारत का राष्ट्रवाद विश्व के सामने ऐसा आदर्श रखेगा जहाँ व्यक्ति, वर्ग, जाति सभी समान होंगे।"
- अरविन्द घोष के बारे में **'रोम्यां रोलां'** ने कहा — "अरविन्द घोष के विचारों में एशिया एवं यूरोप की प्रतिभा का सर्वोत्तम समन्वय पाया जाता है।"
- अरविन्द घोष के विचारों में अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा नारा भी दिखाई देता है।
  - ✓ **"नियन्त्रण नहीं तो सहयोग नहीं"** का नारा दिया।
- अरविन्द घोष के अनुसार — "बंगाल का विभाजन भगवान का आशीर्वाद है।"
- अरविन्द घोष को लॉर्ड मिन्टो ने **"सबसे खतरनाक व्यक्ति"** कहा।
- अरविन्द घोष की अनुयायी फ्रांसीसी महिला **मीरा रिचर्ड** थीं जिन्होंने उनकी मृत्यु के बाद ऑरोविल को सम्भाला था। (देहान्त — 1973)
- अरविन्द घोष का आश्रम **ऑरोविल** भारत और फ्रांस के बीच सम्बन्धों में सांस्कृतिक एकता का प्रतीक माना जाता है।
- **रोनाल्डशे** — "अरविन्द घोष ने अराजकता के भयावह वातावरण में धर्म का प्रभाव जगाकर इसको अधिक प्रभावी, स्फूर्तिदायक और व्यक्ति के अनुकूल बना दिया।"
- **अरविन्द घोष** — राज्य को एक **'रुई-शाला'** कहा।
- घोष ने व्यक्तिवाद को **'मिथ्या दर्शन'** कहा था।
- **व्यक्तिवाद को मिथ्या दर्शन** — अरविन्द घोष
- **विचारधारा को मिथ्या चेतना** — कार्ल मार्क्स

**पुस्तक -**

1. **The Life Divine** — इस पुस्तक में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का उल्लेख किया गया है।
2. **सावित्री (Savitri)** — इस पुस्तक में अरविन्द घोष ने सत्यवान सावित्री की कथा के आधार पर एक आध्यात्मिक संदेश दिया है। ये इनका एक आध्यात्मिक महाकाव्य और कविता संग्रह है।
3. **The Human Cycle (मानव चक्र)** — इस पुस्तक में व्यक्ति के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों का चक्र सिद्धान्त परिभाषित किया है।
4. **The Idea of Human Unity (मानव एकता का विचार)** — इसमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और **'विश्व राज्य'** की स्थापना का उल्लेख किया गया है।
5. **Essay on Gita (गीता पर निबन्ध)** — इस पुस्तक में कुरुक्षेत्र के युद्ध को **धर्म युद्ध** कहा था।
   - ✓ इसी पुस्तक में अरविन्द घोष ने लिखा है कि मेरी मुलाकात ईश्वर से हुई है उन्होंने मुझे गीता दी और सनातन धर्म से मुलाकात करवाई।
6. **No Compromise** — इसमें अरविन्द घोष ने अपने उग्र राष्ट्रवादी विचारों पर बल दिया है और एक कठोर रुख अपनाने पर बल दिया है।

7. **The Doctrine of Passive Resistence** — इस पुस्तक में निष्क्रिय प्रतिरोध का सिद्धान्त दिया।
8. **वेदों का रहस्य** — इस पुस्तक में धार्मिक ग्रंथों की नई परिभाषा दी।
9. **The Synthesis of Yoga** — इस पुस्तक में शिक्षा एवं आध्यात्मिकता का मार्ग बताया।
   - ✓ **योग** को आन्तरिक शक्ति का आधार माना।

Toppersnotes
Unleash the topper in you